

4. पोटाशियम परमेंगनेट/अन्य संक्रमण रहित करने वाली दवा का प्रयोग 400 ग्रा.प्रति एकड़ की दर से 45 दिन के अन्तराल पर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

### पाँचवाँ पहल:

#### मछलियों की त्वरित वृद्धि के लिए रसायन का प्रयोग

- बीटामीन, एमीनोएसीड एवं खनिज के मिश्रण का प्रयोग 5 से 10 ग्राम प्रति कि.ग्रा. मत्स्य आहार में मिला कर करें।
- जियोलाईट का प्रयोग 10 कि.ग्रा./एकड़ प्रति माह की दर से करें।
- खनिज मिश्रण 10 ग्रा. प्रति कि.ग्रा. मत्स्य आहार के साथ (या) 10 कि.ग्रा./एकड़ प्रति माह की दर से तालाबों में घोलकर छिड़काव करें।

#### लागत एवं आमदनी का व्यौदा

(तालाब का जल क्षेत्र = 1 एकड़)

क्रं.	मद (आईटम)	परम्परागत तरीके से मत्स्य पालन/खर्च (रु. में)	वैज्ञानिक एवं बेहतर प्रबंधन से मत्स्य पालन/खर्च (रु. में)
i	मत्स्य बीज	20,000.00	20,000.00
ii	दवा	2,500.00	2,500.00
iii	उर्वरक	2,500.00	2,500.00
iv	मजदूर	10,000.00	10,000.00
v	प्रोबायोटिक्स	शून्य	5,000.00
vi	पूरक आहार	शून्य	1,35,000.00
vii	मछली निकासी पर खर्च (उत्पाद मूल्य का 10%)	शून्य	20,000.00
(क)	कुल मछली का उत्पाद	600 कि.ग्रा.	2600 कि.ग्रा.
(ख)	कुल खर्च	35,000.00	1,95,500.00
(ग)	बिक्री मूल्य	150 प्रति कि.ग्रा.	150 प्रति कि.ग्रा.
(घ)	कुल आमदनी	90,000.00	3,90,000.00
(ङ.)	शुद्ध आमदनी	5,500.00 यानि 1 लाख	1,95,000.00
(च)	फसल अवधि	10 महीना	पाँच महीना फरवरी से जून एवं जुलाई से नवम्बर



## मछली पालन हेतु तालाब प्रबंधन का बेहतरीन तरीका

तालाब के जल क्षेत्र की इकाई: 1 एकड़



**मत्स्य निदेशालय**  
 पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग  
 द्वारा जनहित में प्रकाशित

मत्स्य निदेशालय, पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग, बिहार

## I. तालाब में मत्स्य बीज संचय से पहले प्रबंधन

### प्रथम पहल:

- तालाब से जलीय खर-पतवार की निकासी करा लें। खर-पतवार निकासी का कार्प मजदूर की मदद से (या) जाल की मदद से (या) रासायनिक दवा 2-4 D 3 कि.ग्रा./एकड़ की दर से उपयोग करें।
- तालाब से अवांछित मछलियों की निकासी करा लें। अवांछित मछलियों की निकासी जाल चला कर (या) तालाब सुखा कर (या) 1000 कि.ग्रा. प्रति एकड़ महुआ की खल्ली का प्रयोग कर (या) 150 कि.ग्रा. प्रति एकड़ की दर से ब्लीचींग पाउडर का प्रयोग से कर सकते हैं। ब्लीचींग पाउडर का प्रयोग शाम को (सूर्यास्त के बाद) करें।
- अवांछित कीड़े-मकोड़े की निकासी करा लें। इसके लिए सर्फ एवं वनस्पति तेल (या) 100 एम.एल./एकड़ की दर से 10% साईपरमोथ्रिन (या) बायोपेस्टीसाईड का उपयोग करें।

### दूसरा पहल:

- चूने का प्रयोग 50 कि.ग्रा./एकड़ की दर से करें।
- मवेशी के गोबर का प्रयोग 2000 कि.ग्रा./एकड़ की दर से करें।
- सरसों (या) राई की खल्ली का प्रयोग 100 कि.ग्रा./एकड़ की दर से करें।
- यूरिया का प्रयोग 50 कि.ग्रा./एकड़; की दर से करें (पुराने तालाब में यूरिया ना दें)।
- सिंगल सूपरफॉस्फेट का प्रयोग 100 कि.ग्रा./एकड़ की दर से करें।
- पोटाश का प्रयोग 20 कि.ग्रा./एकड़ की दर से करें।
- सूक्ष्म खनिज मिश्रण का प्रयोग—10 कि.ग्रा./एकड़ की दर से करें।

### तीसरा पहल:

तालाब को एक सप्ताह तक छोड़ दें।

### चौथा पहल:

मत्स्य बीज संचय से 24 घंटा पूर्व तालाब में खाली जाल चला दें।

### पाँचवाँ पहल:

मत्स्य बीज संचय से 24 घंटा पूर्व तालाब में जाल चलाने के बाद 400 ग्राम/एकड़ की दर से पोटाशियम परमेग्नेट या अन्य पानी को संक्रमण रहित करने वाली दवा का छिड़काव तालाब में करें।

## II. मत्स्य बीज संचय के समय प्रबंधन

- प्रजाति का चुनाव— रोहु, कतला, मृगल, ग्रास कार्प, कॉमन कार्प एवं सिल्वर कार्प।
- प्रजाति का अनुपात— उपलब्धता के अनुसार निम्न प्रकार से तय करें:
  - कतला—40%, रोहु—20%, मृगल—20%, कॉमन कार्प—20%
  - सिल्वर कार्प—40%, रोहु—20%, मृगल—30%, ग्रास कार्प—10%
  - कतला—50%, रोहु—30%, मृगल—10%, ग्रास कार्प—10% (उत्तम प्रजाति अनुपात)
  - कतला—20%, सिल्वर कार्प—20%, रोहु—40%, ग्रास कार्प—10% एवं कॉमन कार्प—10%
  - सिल्वर कार्प—40%, ग्रास कार्प—20%, कॉमन कार्प—40% (शीत-कालीन फसल चक्र के लिए)
- मत्स्य बीज ईयरलिंग (साल भर का बीज) का आकार:
 

औसत लम्बाई	— 150–200 मी.मी.
औसत वजन	— 50–100 ग्राम
- बीज संचय का अनुकूल समय: सुबह 8 बजे से 10 बजे।
- मत्स्य बीज संचयन का महीना: फरवरी एवं जुलाई (5 महीना का दो फसल चक्र) (1 फरवरी से 30 जून एवं 1 जुलाई से 30 नवम्बर)

## III. मत्स्य बीज संचयन उपरान्त प्रबंधन

### प्रथम पहल:

- प्रति माह उर्वरक का प्रयोग करें। रासायनिक एवं जैविक उर्वरक के प्रयोग का अन्तराल 15 दिन होना चाहिए। उर्वरक के प्रयोग से 2 दिन पूर्व 10–15 कि.ग्रा./एकड़ की दर से चूने का तालाब में घोल कर छिड़काव करें।
  - प्रत्येक माह के प्रथम तारीख को मवेशी का गोबर—400 कि.ग्रा./एकड़ की दर से घोल कर छिड़काव करें।
  - प्रत्येक माह के 15 तारीख को रासायनिक खाद के रूप में सिंगल सुपरफॉस्फेट (या) डी.ए.पी. का प्रयोग 10 कि.ग्रा./एकड़ की दर से घोल कर छिड़काव करें।
- पानी में प्लैकटन (प्लवक) की मात्रा बढ़ाने के लिए प्रति माह प्लैकटन बढ़ाने वाली दवा जैसे जलीय प्रोबायोटिक्स/जिंक सल्फेट का प्रयोग 1 कि.ग्रा. प्रति एकड़ की दर से करें।

### दूसरा पहल: आहार प्रबंधन

#### मत्स्य आहार तालिका (औसत एफ.सी.आर. 2:1)

(मत्स्य बीज संचय दर @ 2000/एकड़, औसत वजन—100 ग्राम, कुल वजन—200 कि.ग्रा.)

क्रं.	महीना	आहार दर औसत वजन का	आहार का प्रकार, आकार, एफ.सी.आर.	प्रतिदिन भोजन की मात्रा (कि.ग्रा. में)	एक माह में कुल भोजन की मात्रा (कि.ग्रा. में)	माह के अन्त में संचित मछलियों की कुल वृद्धि कि.ग्रा.
i	1	6%	25/4,3, ऐमएल एफ.सी.आर. 1.6:1	12	360	200+225=425
ii	2	5%	25/4,3—4, ऐमएल एफ.सी.आर. 1.6:1	21	630	425+394=819
iii	3	4%	25/4,3—4, ऐमएल एफ.सी.आर. 2:1	33	990	819+495=1314
iv	4	3%	20/4,4, ऐमएल एफ.सी.आर. 2:1	39	1170	1314+585=1899
v	5	2.5%	20/4,4—6, ऐमएल एफ.सी.आर. 2:1	47	1410	1899+705=2604
vi	कुल		औसत एफ.सी.आर, 4500/2400 = 1.9:1		4560=4500	2604=2600 शुद्ध वजन 2600+200=2400

मछलियों के जल्द वृद्धि के लिए खजिन मिश्रण 10 ग्रा. प्रति कि.ग्रा. मत्स्य आहार में मिलाकर मछलियों को खिलाएं। खनिज तत्व सही रूप से आहार में मिले इसके लिए बाइप्डर का प्रयोग 30 मी.ली. प्रति कि.ग्रा. आहार की दर से करें।

मछलियों के जल्द वृद्धि के लिए प्रोबायोटिक्स का प्रयोग 5 से 10 ग्रा. प्रति कि.ग्रा. आहार के साथ मिलाकर मछलियों को खिलाने में करें। प्रोबायोटिक्स सही रूप से आहार में मिले इसके लिए बाइन्डर का प्रयोग 30 मी.ली. प्रति कि.ग्रा. आहार के दर से करें।

### तीसरा पहल:

गर्भी के समय में महीने में एक बार एवं जाड़े के समय महीने में दो बार जाल चलाएं।

### चौथा पहल: प्रोबायोटिक्स एवं अन्य दवा

जलीय प्रोबायोटिक्स का प्रयोग 400 ग्रा. प्रति एकड़ की दर से 30 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। मुदा प्रोबायोटिक्स का प्रयोग 400 ग्रा. प्रति एकड़ की दर से नमीयुक्त बालू मिला कर छिड़काव करें। चूने का प्रयोग प्रति 15 दिन पर पी.एच.मान के अनुसार 10–15 कि.ग्रा./एकड़ की दर से करें।